गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/ICD/1252/2012-2014

श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास इन्दौर

golalariya_darshan@yahoo.in

गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com

मासिक
गोलालारीय दर्शन

अपनों के साथ अपनी बातें

जो भरा नहीं हैं भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। हृदय नहीं पत्थर हैं वो, जिसे समाज से प्यार नहीं।

वर्ष : 4 अंक : 4 पृष्ठ संख्या : 8 माह – सितम्बर 2012 सहयोग राशि : 100 रु.

सफलता के क्षितिज पर समाज के गौरव...

– **प्रिया जैन** ने म.प्र. राज्य बोर्ड से कक्षा बारहवीं में 92% अंक प्राप्त कर मेरिट लिस्ट में पांचवा स्थान अर्जित कर अपने परिवार का नाम रोशन किया है। सी.ए. व मैनेजमेंट की डिग्री हासिल करना उनका आगामी लक्ष्य है।

– **आरोही जैन** ने सीबीएसई बोर्ड से कक्षा बारहवीं में 90% अंक प्राप्त किये, साथ ही पी.एम.टी. में म.प्र. में 753वीं रैंक प्राप्त कर भोपाल मेडीकल कॉलेज में प्रवेश प्राप्त कर लिया है। आपके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ....

– **मृदुला जैन**, भोपाल ने सीबीएसई बोर्ड से कक्षा दसवीं में सीजीपीए 10 प्राप्त कर परिवार व समाज को गौरवांवित किया। मृदुला का लक्ष्य जीवविज्ञान विषय लेकर डॉक्टर बनना है । हम उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते है....

स्वागत... अभिनंदन... वंदन.... शुभकामनाएँ...

आज पुन: वह मंगल बेला आन पहुँची है जब हम अपनी प्रतिभाओं की सफलता का यशोगान कर स्वयं को गौरवांवित अनुभव कर रहे हैं। इन सफल नौनिहालों में नन्हें–मुन्ने, जिन्होंने अभी अभी सफलता का स्वाद चखा है, साथ ही किशोर व युवा प्रतिभाएं भी है जिन्हें आगे भी नित नई चुनौतियों का सामना करना है। अपनी आँखों में स्वर्णिम भविष्य के सपने लिये ये बाल एवं युवा प्रतिभाएं आज समाज के समक्ष हैं। स्वागत है इन सभी प्रतिभाओं का जिन्होंने निष्ठापूर्वक वर्षभर कठोर परिश्रम कर अपना लक्ष्य प्राप्त किया है। अभिनंदन है उन माता पिताओं का जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से अपने नौनिहालों के प्रयासों को कठिन परिस्थितियों में भी प्रोत्साहित करते रहे और कंधे से कंधा मिलाकर उनकी सफलता में सहभागी बने। वंदन है उन शिक्षकों का जिनके सफल मार्गदर्शन से सफलता का यह मार्ग प्रशस्त हो सका और छात्र अपना सर्वोत्तम लक्ष्य प्राप्त कर सके। जिस प्रकार कृषक बीज बोने से लेकर फसल पकने तक खेत में विषम धूप, वर्षा और शीत को सहते हुये कड़ी तपस्या करता है और अंतत: श्रेष्ठ फसल काटता है, विद्यार्थियों के लिए भी यह क्षण कुछ वैसा ही है जब उन्होंने पूरे वर्ष लगन, निष्ठा और एकाग्रता से माँ सरस्वती की आराधना करते हुए अंत में सफलता रुपी वरदान प्राप्त किया। **'गोलालारीय दर्शन परिवार'** अपने नौनिहालों की स्वर्णिम सफलता से अभिभूत हो उन्हें अनेकानेक बधाईयां प्रेषित करता है और उनके आगामी जीवन के लिये शुभकामनायें देता है।

सफलता और सम्मान का साथ चोली–दामन सा है। जैसे जैसे व्यक्ति के जीवन में सफलता प्राप्त होती है, सम्मान स्वत: ही मिलने लगता है। फिर यदि मुद्दा बाल प्रतिभाओं के सम्मान का हो तो यह सम्मान उन्हें प्रोत्साहन स्वरूप अवश्य ही प्रदान किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाना एक महत्वपूर्ण पहल है। यह सत्य है कि भावी कर्णधार ही भविष्य में प्रगति और विकास के लिये नये आयाम स्थापित करेंगे। इस समय उन्हें सम्मानित और प्रोत्साहित करना राष्ट्र और समाज के निर्माण में उनकी भागीदारी के लिये अत्यंत प्रेरणास्पद होगा। ऐसे सम्मान न केवल स्वयं विद्यार्थियों वरन् अन्य सहपाठी छात्रों के लिये भी प्रेरक होते है और उन्हें अधिक परिश्रम करने के लिये प्रोत्साहित करते हैं। इससे उनके बीच स्वस्थ प्रतियोगिता का भाव विकसित होता है। कठिन प्रतियोगिता के इस आधुनिक युग में सर्वोच्च स्थान हासिल कर ही विद्यार्थी अपना भविष्य उज्जवल बना सकते है। बालक हो अथवा युवा, प्रतिभाओं को सही समय पर उचित सम्मान दिया जाना उनकी लगन, मेहनत और आत्मविश्वास को द्विगुणित कर नयी गतिशीलता प्रदान करती है। इससे भविष्य में समाज के कल्याणार्थ अपनी योग्यता और क्षमताओं का उपयोग वे दुगुने उत्साह से करते है। बाल तथा युवा प्रतिभाओं के सम्मान का उद्देश्य उन्हें कुछ और बेहतर बनने की प्रेरणा देना है जिससे वे अपनी क्षमताओं को बढ़ाते हुए और बेहतर कार्य करें। छात्र–छात्रायें अपनी सफलताओं और उपलब्धियों को ही आगे बढ़ने हेतु प्रेरणास्रोत बनायें तथा अपने ज्ञान की धार को सतत् रूप से तेज करते रहें।

परिवार और समाज के वरिष्ठजनों का भी यह महत्वपूर्ण कर्त्तव्य व उत्तरदायित्व है कि हम अपने नौनिहालों सतत् रुप से प्रेरित करें जिससे वे देश व समाज के सर्वतोमुखी विकास के पथ पर आगे बढ़ सके व राष्ट्र के कर्त्तव्यनिष्ठ नागरिक बन सकें। आज समाज से पाया सम्मान और प्रोत्साहन निस्संदेह बच्चों के मन में स्मरणीय रहेगा और भविष्य में वे समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को पूर्ण करने हेतु अधिक सक्रिय योगदान दे सकेंगे। यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि वर्तमान में हमारे समाज की रुचि इस ओर बढ़ी है और प्रतिभाओं के सम्मान हेतु कुछ एक सामाजिक और धार्मिक संस्थायें अग्रणी हुयी हैं। परमपूज्य मुनि 108 श्री क्षमासागरजी एवं श्री ज्ञानसागरजी द्वारा आयोजित सम्मान समारोह इस दिशा में अत्यंत प्रशंसनीय है तथापि इस प्रकार के प्रयासों की ओर अधिक आवश्यकता है।

प्रतिभा भले ही जन्मजात होती है या सतत् परिश्रम से अर्जित की जाती है, किन्तु अध्यात्मिक आशीर्वाद तथा प्रोत्साहन से उनमें और अधिक निखार आ सकता है। हमारे जीवन के बहुमुखी विकास में हमारे धार्मिक आदर्शों और नैतिक मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यही आदर्श और नैतिक मूल्य हमारी आजीविका का मंगल पथ प्रशस्त करते हैं। हमारे धर्मगुरू सदैव हमारा मार्गदर्शन करते हैं और सीख देते है कि अपने प्रत्येक कर्म के साथ धर्म जोड़कर उसे सत्कर्म बनायें। विचारों के साथ धर्म जोड़कर उन्हें सद्विचार बनायें। संकल्प के साथ धर्म जोड़कर उसे सद्संकल्प बनायें। जीवन के प्रत्येक पक्ष के साथ धार्मिक विवेक जोड़कर सभी पक्षो को उज्जवल बनाये तभी हमारा जीवन आदर्श हो सकेगा। इस प्रकार धर्मगुरुओं और संस्थाओं द्वारा दिया गया सम्मान बालकों और युवाओं के जीवन को सत्कर्मों की ओर निर्देशित करता है। बच्चों के साथ ही कुछ बातें उनके माता–पिता के बारे में भी करना न्यायसंगत होगा। सफल बच्चों की सफलता के पीछे कहीं न कहीं उनके माता पिता और परिवार की भूमिका अवश्य होती है। बच्चों की शिक्षा दीक्षा हेतु आवश्यक सामग्री और धन के प्रबंधन के साथ ही नियमित अध्ययन हेतु व्यवस्थाओं और समय का सुप्रबंधन, संतुलित आहार का नियमन आदि अनेक ऐसे बिन्दु है जो न्यूनाधिक रुप से बच्चों की सफलता के लिये उत्तरदायी होते है। इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है वर्तमान युग की गलाकाट प्रतिस्पर्धा जिसमें केवल 'सर्वोत्तम ही विजयी' का एकसूत्रीय सिद्धांत लागू होता है। इस प्रतियोगिता में न केवल प्रतिस्पर्धी होना वरन् विजेता के रूप में ऊपर आना अत्यंत दुरुह कार्य है जिसमें अत्यधिक मानसिक तनाव व दवाब का सामना करना पड़ता है। ऐसे समय माता पिता और परिवार का सहयोग ही मानसिक संबल प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में बच्चों के साथ ही पालकों के लिये भी यह समय कड़ी परीक्षा का होता है। लेकिन पालकों की भूमिका यही इति नहीं होती। बालक के परीक्षा आवेदन के समान ही सम्मान और पुरस्कार हेतु आवेदन भी उतना ही महत्वपूर्ण है। अपने प्रतिभावान् बालक/बालिका को समाज के सम्मुख लाना भी उतना अहम है। प्रसन्नता है कि अनेक माता पिता इसे महत्व दे रहे हैं; जिनका प्रमाण हमारे कार्यालय पर लगातार आ रही अंकसूचियां है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमें लगभग 150 अंकसूचियां प्राप्त हुयी, अंतिम तिथि के कई दिनों बाद भी । आपका उत्साह प्रशंसनीय है परन्तु एक निवेदन है कि कृपया अंतिम तिथि की प्रतीक्षा न करें। परीक्षा परिणाम घोषित होते ही हमें सूचित करे तथा बच्चे का चित्र और अंकसूची की प्रतिलिपि प्रेषित करें। कुछेक माता पिता आज भी असमंजस में पड़े जान पड़ते है या कुछ अपनी अति महत्वाकांक्षा के कारण अपने बच्चों की प्रतिभा को तुलनात्मक रूप से कमतर आँकते हुये उसे समाज के समक्ष लाने में हिचकिचाते हैं। आपसे निवेदन है कि ऐसी गलती न करें। एक बार प्रयास कर आगे बढ़े और विश्वास रखें कि आपकी यह छोटी सी प्रोत्साहन भरी पहल बच्चे के भविष्य के लिये कितनी प्रेरक सिद्ध होती है। ''गोलालारीय दर्शन'' अपने नौनिहालों के लिये एक मंच स्वरूप है जहां से वे अपने समाज के समक्ष स्वयं की पहचान स्थापित कर सकते हैं। गोलालारीय दर्शन में छपी सभी प्रतिभाओं को प्रशस्ति पत्र डाक द्वारा प्रेषित किये जावेंगे ।

श्रीमती अनुपमा जैन, सह संपादिका

इन्दौर की **नित्यता जैन** सुपुत्री श्री नितिन–निधि जैन चोइथराम स्कूल में कक्षा तीसरी में अध्ययनरत है। बहुमुखी प्रतिभा की धनी नित्यता ने इसी वर्ष म.प्र. राज्य स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता में अंडर 9 बालिका वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त कर अक्टूबर 2012 में राष्ट्रीय स्पर्धा में म.प्र. का प्रतिनिधित्व करेगी । म.प्र. राज्य स्तरीय यूसीमास प्रतियोगिता 12 में म.प्र. में थर्ड रनरअप रहकर चेन्नई में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में म.प्र. का प्रतिनिधित्व कर रही है। नित्यता ने इसके पूर्व 5वीं एसओएफ इंटरनेशनल मैथेमेटिक्स व साइबर ऑलिम्पयाड में म.प्र. में तृतीय स्थान प्राप्त कर मध्यप्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री रामनरेशजी यादव के कर कमलों से सम्मान प्राप्त किया। नित्यता को फैशन एवं मॉडलिंग में भी विशेष रुचि है, वे कई फैशन शो में भाग ले चुकी है। स्कूल की पढ़ाई के साथ अनेक प्रतियोगिताओं में भी भाग लेते हुए अनेक पुरस्कार प्राप्त किये है।

17 अगस्त को लखनऊ के महावीर उद्यान में अहिंसा के प्रणेता भगवान श्री महावीर स्वामी की मूर्ति को छैनी हथौड़े से तोड़ने के कृत्य की हम घोर निंदा करते है।

गोलालारीय दर्शन समाज के 4500 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है। यदि आपके किसी रिश्तेदार तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें।